

About the Seminar

The International seminar on 7-8 August 2025 at Jawaharlal Nehru University, New Delhi, in collaboration with the ICSSR, titled *Birsa Munda and Decolonizing Janjatiya Studies*, aims to reshape the narrative surrounding India's Janjatiya (Adivasi) communities by focusing on the life, philosophy, and resistance of Birsa Munda. Celebrated as an iconic figure in India's fight against colonial and feudal domination, Birsa Munda embodies the resilient spirit of Adivasi identity and self-assertion. His leadership in the Ulgulan (Great Rebellion) of 1899-1900 was not merely a political uprising but also a profound declaration of cultural autonomy, ecological values, and indigenous wisdom. This seminar endeavors to challenge the colonial, postcolonial, and mainstream perspectives that have frequently sidelined or oversimplified Janjatiya experiences. By delving into Birsa Munda's legacy, it raises essential questions: How can we decolonize the historical and intellectual frameworks of Janjatiya studies? In what ways can Birsa's vision inform modern efforts to advance Adivasi rights, land justice, and socio-cultural renewal? Bringing together insights from history, sociology, anthropology, literature, and translation studies, this interdisciplinary exchange underscores the urgency of elevating indigenous perspectives in both scholarly and public spheres. Key themes include land dispossession, cultural suppression, environmental equity, and the interplay between Janjatiya worldviews and contemporary life. A special focus will be placed on the role of translation in bridging Adivasi oral traditions and Birsa's teachings to wider audiences, while critiquing the limitations of dominant languages in reflecting the depth of Janjatiya realities. The seminar ultimately positions Birsa Munda as a central figure in global conversations on decolonization, indigenous rights, and ecological sustainability, proposing new directions for academic research to resonate with the lived experiences and ambitions of India's Janjatiya peoples. Through this effort, the seminar aspires to cultivate a more inclusive, reflective, and forward-looking approach to Janjatiya studies.



Celebrating 50 years of CIL
भारतीय भाषा केन्द्र का स्वर्ण जयन्ती वर्ष



JANJATIYA GAURAV (TRIBAL PRIDE) SEMINAR
in collaboration with the Indian Council of
Social Science Research (ICSSR)
Two-day International Seminar
on

Birsa Munda and Decolonizing
Janjatiya Studies
7-8 August, 2025

दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
बिरसा मुंडा और जनजातीय अध्ययन का
उपनिवेशमुक्तिकरण

Venue
Jawaharlal Nehru University,
New Delhi-110067



Convener
Dr. Ganga Sahay Meena
Associate Professor, CIL
Jawaharlal Nehru University
New Delhi- 110067

सेमिनार के बारे में

ICSSR के सहयोग से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में 7-8 अगस्त 2025 को *बिरसा मुंडा और जनजातीय अध्ययन का उपनिवेशमुक्तिकरण* विषयक यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार भारत के जनजातीय (आदिवासी) समुदायों से जुड़े विमर्श को बिरसा मुंडा के जीवन, दर्शन और प्रतिरोध के केंद्र में रखकर नए सिरे से समझने का प्रयास करेगा। औपनिवेशिक और सामंती उत्पीड़न के खिलाफ भारत के संघर्ष में एक महान व्यक्तित्व के रूप में पहचाने जाने वाले बिरसा मुंडा, आदिवासी अभिव्यक्ति और पहचान के अडिग उत्साह के प्रतीक हैं। 1899-1900 के उलगुलान में उनकी अगुवाई न केवल एक राजनीतिक विद्रोह थी, बल्कि सांस्कृतिक संप्रभुता, पर्यावरणीय नैतिकता और स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की घोषणा भी थी। यह सेमिनार औपनिवेशिक, उत्तर-औपनिवेशिक और मुख्यधारा के अकादमिक ढांचों की पड़ताल करेगा, जो अक्सर जनजातीय कथाओं को हाशिए पर धकेलते या सरलीकृत करते हैं। बिरसा मुंडा की विरासत की जांच के माध्यम से, यह सेमिनार कुछ महत्वपूर्ण सवालों को संबोधित करना चाहता है, जैसे, हम जनजातीय अध्ययन के इतिहास और ज्ञान मीमांसा को कैसे औपनिवेशिकरण से मुक्त कर सकते हैं? बिरसा का दृष्टिकोण आदिवासी अधिकारों, जल-जंगल-जमीन की राजनीति और सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जनन के समकालीन दृष्टिकोणों को कैसे प्रेरित कर सकता है? आदि। यह अंतरविषयक संवाद इतिहास, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, साहित्य और अनुवाद अध्ययन से जुड़ेगा, जो शैक्षिक और सार्वजनिक विमर्शों में देशज आवाजों को बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर देगा। चर्चाएं भूमि अलगाव, सांस्कृतिक विलोपन, पर्यावरणीय न्याय और जनजातीय विश्वदृष्टि और आधुनिकता के बीच संबंध जैसे विषयों पर केंद्रित होंगी। सेमिनार में अनुवाद की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जो आदिवासी मौखिक परंपराओं और बिरसा के विचारों को व्यापक पाठकों तक पहुंचाने में मदद करता है, साथ ही प्रमुख भाषाओं की जनजातीय जीवन-जगत के सार को व्यक्त करने में असमर्थता पर सवाल उठाता है। अंततः, यह बिरसा मुंडा को विपनिवेशिकरण, स्वदेशी अधिकारों और पर्यावरणीय स्थिरता पर वैश्विक संवाद में एक केंद्रीय व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करने का प्रयास करेगा, जो शैक्षिक विद्वता के लिए भारत के जनजातीय समुदायों की जीवंत वास्तविकताओं और आकांक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने के रास्ते सुझाता है। इस पहल के माध्यम से, सेमिनार जनजातीय अध्ययन की एक समावेशी, चिंतनशील और परिवर्तनकारी समझ को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखता है।

Abstracts are invited for this international seminar. Abstracts should be uploaded in **English or Hindi at the given Google form.**

Sub-Themes

- Birsa Munda: Life, Legacy, and Philosophy
- Decolonizing Adivasi Historiography
- The Centrality of Land and Forests in Adivasi Life, Philosophy, and Livelihood.
- Adivasi Knowledge Systems and Epistemology.
- Cultural Sovereignty and the Erasure of Tribal Cultures in Dominant Narratives.
- Limitations of Colonial Methodologies in Research.
- Adivasi Literature and the Process of Decolonization.
- Translation of Adivasi Texts and the Process of Decolonization.
- Adivasi Studies in Academic Spheres, Its Importance and Limitations.

Important Dates:

- Last date for submitting abstracts:
 - **15th May 2025**
- Notification of approved abstracts:
 - **20th May 2025**
- Last date for submitting full papers:
 - **15th June 2025**
- Last Date for seminar registration:
 - **15th June 2025**
- Notification of approved full papers and invitation:
 - **7th July 2025**

Registration Link

[Click here for Registration](#)

Registration Fee and details

INR 500 for Indian Students and Research Scholars

INR 1000 for Indian Faculty

INR 3000 for Foreign Participants

Account Details for Payment

Account Holder Name: JNU Sponsored

Seminar & Conference A/c

Account No.: 35404650496

IFSC: SBIN0010441 **Bank:** SBI

Branch: JNU New Campus

MICR No. 110002428

Chief Patron:

Prof. Santishree Dhulipudi Pandit

Vice Chancellor

Jawaharlal Nehru University, New Delhi

Organizing Committee:

Prof. Shoba Sivasankaran

Dean, School of Language, Literature and

Culture Studies, JNU, New Delhi

Prof. Bandana Jha

Chairperson, Center of Indian Languages,

Jawaharlal Nehru University, New Delhi

Dr. Ganga Sahay Meena

Convener, CIL, JNU

Contact: 9559446996, 8853087242

jnuictribal@gmail.com

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए शोध सार (Abstract) आमंत्रित हैं। शोध सार **अंग्रेजी या हिंदी** में दिए गए Google Form पर अपलोड करें।

उप-विषय

- बिरसा मुंडा: जीवन, विरासत और दर्शन।
- आदिवासी इतिहासलेखन का उपनिवेशीकरण।
- आदिवासी जीवन, दर्शन और आजीविका में भूमि और वनों की केंद्रीयता।
- आदिवासी ज्ञान प्रणालियां और ज्ञानमीमांसा।
- सांस्कृतिक संप्रभुता और प्रमुख आख्यानों में जनजातीय संस्कृतियों का विलोपन।
- अनुसंधान में उपनिवेशवादी पद्धतियों की सीमाएं।
- आदिवासी साहित्य और उपनिवेशमुक्तिकरण की प्रक्रिया।
- आदिवासी पाठों का अनुवाद और उपनिवेशमुक्तिकरण की प्रक्रिया।
- अकादमिक दायरों में आदिवासी अध्ययन, उसका महत्व और उसकी सीमाएं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

- शोध सार जमा करने की अंतिम तिथि - **15 मई, 2025**
- स्वीकृत शोध सार की सूची- **20 मई 2025**
- पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि- **15 जून, 2025**
- रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि- **15 जून, 2025**
- स्वीकृत शोध पत्रों की सूची एवं आमन्त्रण- **7 जुलाई, 2025**